

ध्वनि प्रदूषण

"प्रवाहिनी" के पिछले अंक में इसी शीर्षक के अन्तर्गत एक आलेख पढ़ा था। परिणामतः मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न हुए, जिनका समाधान अपेक्षित प्रतीत होता है।

वर्तमान युग में ध्वनि प्रदूषण की समस्या ने गंभीर रूप धारण कर लिया है। ध्वनि अथवा तेजी से बढ़ते हुए शोर की बात जब भी उठती है तो हम सभी के मस्तिष्क में विविध वाहनों, लाउडस्पीकरों एवं फैक्ट्रियों से उत्पन्न होने वाले शोर के संबंध में ही विचार आता है। इस शोर को कम करने हेतु विविध प्रकार के उपाय जैसे साइलेंसर आदि का प्रयोग भी किया जा रहा है। यह बात अवश्य है कि इनके द्वारा उत्पन्न होने वाले शोर की निरन्तरता श्रवण शक्ति के लिए अधिक हानिकारक होती है।

ध्वनि की तीव्रता या शोर एक निश्चित पैमाने तक ही घातक मानी गई है, किन्तु क्या नित्य-प्रति एक ही समय उसी अनुपात में उत्पन्न होने वाली ध्वनि श्रवणेन्द्रियों पर कोई प्रभाव नहीं डालती है? यह प्रश्न विचारणीय है। यहां संकेत विद्युत चलित घरेलू उपकरणों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि की ओर है। आज के अति व्यस्त जीवन में सभी के पास समय का अभाव है। परिवार में देखें, तो पति-पत्नी एवं बच्चों को लगभग एक ही समय तैयार होकर घर से बाहर जाना पड़ता है। इस भागमभाग में यदि प्रेशर कुकर एवं मिक्सी का सहारा न लिया जाए तो बेचारी गृहिणी क्या करे। इसके विपरीत जहां पत्नी घर पर ही रहती है वहां भी इन उपकरणों का प्रयोग समय की बचत व कार्य की सरलता के लिए किया जा रहा है। दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाले इस प्रकार के उपकरणों की संख्या बढ़ती ही जा रही है- प्रेशर कुकर, मिक्सी, वाशिंग मशीन एवं कूलर तो अति आवश्यक हैं ही, साथ में मनोरंजन के लिए आडियो व वीडियो कैसेट की आवश्यकता भी कम नहीं कही जा सकती है।

जरा एक घर का दृश्य देखें - एक ओर गृहिणी रसोई में प्रेशर कुकर चढ़ाती है, साथ ही मिक्सी अथवा ग्राइंडर में मसाला भी पीसना है या चटनी से निपट कर वह वाशिंग मशीन में कपड़े भी डाल देती है। यदि मशीन स्वचालित है तो केवल बटन दबाने की ही आवश्यकता है इसलिए मशीन चलती रहती है। इस समय अति व्यस्त गृहिणी वीडियो फिल्म तो नहीं, हां आडियो कैसेट अवश्य लगा लेती है, जिससे अकेलापन न लगे और गानों के स्वरों से मनोरंजन एवं सरसता भी बनी रहे। यदि अधिक गर्मी है तो फिर कूलर क्यों न चले। इस समय यदि किसी से बात करनी पड़े तो बोलने के स्वर को ऊंचा रखना स्वाभाविक है।

अब प्रश्न यह है कि इन सभी यन्त्रों अथवा उपकरणों के सम्मिलित स्वर क्या श्रवणेन्द्रियों के लिए घातक नहीं होते। इतने साधन एवं सुविधाएं होते हुए भी गृहिणी के मुख पर तनाव के चिह्न बने रहते हैं। झुंझलाहट एवं हल्का सिरदर्द अथवा भारीपन की शिकायत भी वह कर सकती है। इस प्रकार की ध्वनियों का अनुपात घर के आकार पर भी निर्भर करता है। इन घरेलू उपकरणों के प्रयोग किए जाने के अपने गुण एवं लाभ अलग हैं, उन्हें नकारा नहीं जा सकता है। इसके अतिरिक्त महिला का कार्य क्षेत्र अब केवल घर तक ही सीमित नहीं रह गया है उसे घर एवं कार्यालय के कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने हैं। अतः इन उपकरणों का प्रयोग लगभग प्रत्येक मध्यवर्गीय परिवार में अनिवार्य आवश्यकता

डा. आशा कपूर, "प्रवक्ता, मानविकी विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय"

रूप में किया जा रहा है।

इन ध्वनियों के साथ-साथ सड़क पर चलने वाले वाहनों एवं फैक्ट्रियों के सायरन अथवा लाउडस्पीकरों का स्वर भी सम्मिलित हो जाता है तो स्थिति अत्यन्त विकट हो जाती है। यहां तीव्र शोर की बात पर रखकर घरेलू उपकरणों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि के बारे में ध्यान आकृष्ट करना मुख्य उद्देश्य है।

गत अंक में प्रकाशित आलेख में यह कहा गया है कि "सामान्यतय 25 डेसीबल तक की ध्वनि को खामोशी, 26 से 65 डेसीबल तक की ध्वनि को साधारण शोर तथा 75 डेसीबल से अधिक की ध्वनि को अत्याधिक शोर कहा जाता है" - ध्वनि प्रदूषण - डा0 दिव्या, प्रवाहिनी, पृ. 3

यह भी कहा जाता है कि साधारण रूप से मनुष्य के कानों पर एक निश्चित सीमा तक की ध्वनि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। किन्तु उपर्युक्त उपकरणों से उत्पन्न होने वाली ये ध्वनियाँ, भले ही दिन के एक निश्चित समय तक के लिए श्रवणेन्द्रियो तक पहुंचती हों, कालान्तर में श्रवणक्षमता अथवा स्वास्थ्य पर इनका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है अथवा नहीं, वैज्ञानिकों के लिए यह शोध का विषय है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अन्य स्वास्थ्य संगठनों ने ध्वनि प्रदूषण मापने हेतु घरेलू उपकरण जन्य ध्वनि को अध्ययन का आधार बनाया होगा, यह कहना कठिन है। प्रायः तीव्र ध्वनि अथवा शोर से व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रभावित होता है, यही तर्क दिया जाता है। आज अपेक्षा है, कि इस निरन्तर होने वाली समवेत ध्वनि के प्रभाव पर भी गंभीरता से विचार किया जाए, क्योंकि इसे किसी भी प्रकार से साधारण शोर के अन्तर्गत नहीं गिना जा सकता है।

क्रिकेट के दीवाने पति से दुखी पत्नी ने बिफरकर कहा "यदि मैं मर जाऊं तो क्रिकेट के चक्कर में तुम मुझे कंधा देने भी नहीं आओगे।"

"लेकिन, तुमसे यह कैसे समझ लिया कि मैच वाले दिन ही मैं तुम्हारी शव यात्रा निकालूंगा" उत्तर मिला।

अपने शहर के एक भिखारी को हिल स्टेशन पर भीख मांगते हुए देखकर हमने पूछा "यहां भी धंधा करने चले आये।" "जी मैं पर्यटन पर निकला हूँ आजकल", भिखारी ने उत्तर दिया।

दादाजी थे कि अपनी जवानी के घुड़सवारी के किरसे सुनाए जा रहे थे। बोर होकर नन्ही पोती ने दादी जी से कहा, दादाजी, जरा लगाम तो लगाओ।

एक बार एक सज्जन अपनी पत्नी के साथ सब्जी लेने गए। सब्जी वाले ने पूछा "साहब, मेम साहब ग्रेजुएट तो होगी ही" साहब बोले, हां मगर क्यों? "कुछ नहीं साहब, वो मेम साहब ने थैले में पहले टमाटर रखे फिर कद्दू।"
